1-7

B. A. III, Geography (Hons), Sub- Population Geog.
Paper VII, Chapter : Demographic Transition.

By - Dr. Ratan Kumar Ji
Head, Geog. Dept.

DEMOGRAPHIC - TRANSITION
जनांकिकी संक्रमण

जनांकिकी संक्रमण सिद्धान्त जनांकिकी विश्लेषण का नवीनतम सिद्धान्त है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि की अलग-अलग अवस्थाएँ होती हैं। यह सिद्धान्त किसी समाज के आर्थिक, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास का द्योतक है तथा उस विकास से प्रभावित जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करता है। कारण किसी प्रदेश में जनसंख्या में सामान्य/प्राकृतिक वृद्धि वहाँ के जन्म दर एवं मृत्यु दर के अन्तर पर निर्भर करता है और आर्थिक-सांस्कृतिक विकास, शिक्षा, जागरूकता का उपरोक्त जन्म दर तथा मृत्युदर पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः किसी प्रदेश में होने वाले क्रमिक विकास के अनुसार जनसंख्या वृद्धि की अवस्थाएं बदलती जाती है इसे ही जनांकिकी संक्रमण कहा गया है।

जनांकिकी संक्रमण सिद्धान्त की व्याख्या करने का प्रयास अनेक भूगोलविदों ने एवं जनसंख्या शास्त्रियों ने किया है। इनमें कुछ विद्वान जनसंख्या विकास की चार अवस्थाएँ तो कुछ ने पांच अवस्थाएँ बताया है परन्तु सबों का मत लगभग एक समान है कि चार या पाँच अवस्थाएँ जनसंख्या वृद्धि की अलग-अलग स्थिति, जन्म दर एवं मृत्यु दर में आने वाले परिवर्तन के साथ तथा आर्थिक विकास, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास के प्रभाव के साथ स्पष्ट किया गया है। इन सिद्धान्तों

में से प्रसिद्ध भूगोलविद् सी॰पी॰ ब्लैकर (C.P. Blacker) के सिद्धान्त की व्याख्या नीचे की जा रही है !-
C.P. Blacker महोदय ने, अपनी पुस्तक "Stages in Population growth" में जनांकिकी संक्रमण की पाँच अवस्थाओं का उल्लेख किया जो निम्न रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है ;—

रेखा चित्र — ब्लैकर की जनांकिकी संक्रमण की विभिन्न अवस्थाएँ —

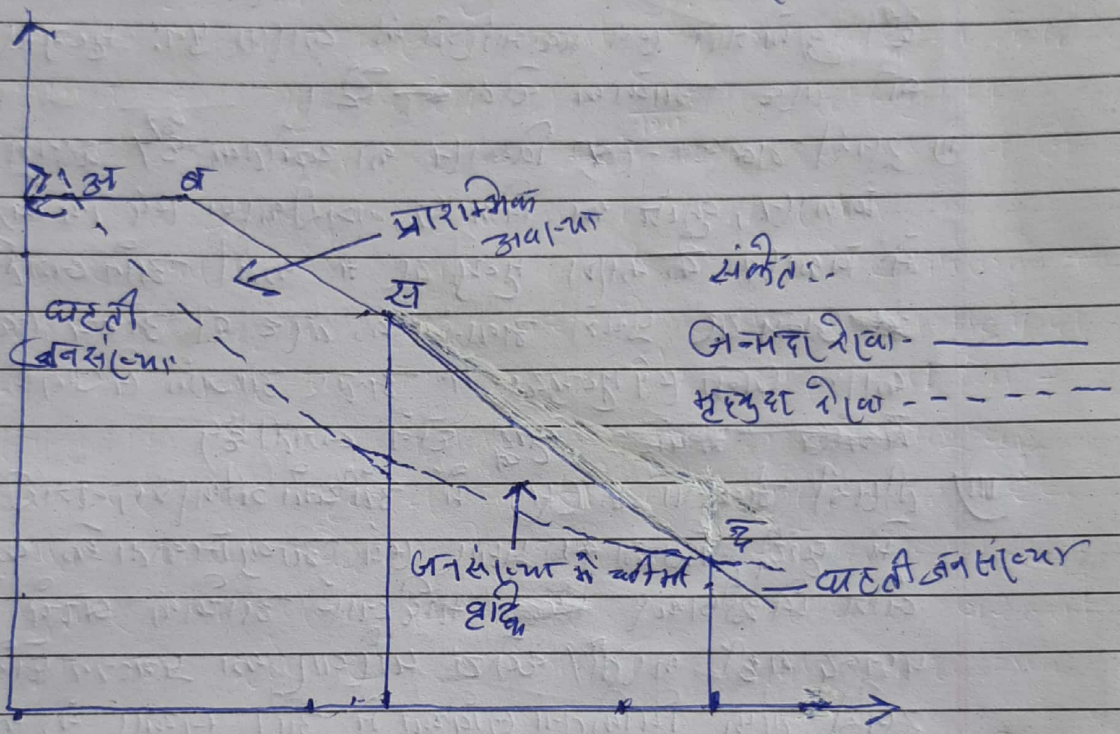

नोट :— उपरोक्त चित्र में :-
(1) अ, ब, स, द कुल चार अवस्थाएँ हैं जिसमें जनसंख्या में वृद्धि की स्थित दर्शाया गया है।
(2) द के बाद पाँचवी अवस्था है जो जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि अर्थात घटती हुई जनसंख्या दर्शाता है।
(3) तीसरा एवं चौथा स्टेज जनसंख्या वृद्धि में जनसंख्या विस्फोट की स्थित है।
(4) संकेत अ से पूर्व जनसंख्या में कमी को दर्शाता है।

उपरोक्त रेखाचित्र के आधार पर एवं ब्लैकर महोदय के अनुसार जनसंख्या वृद्धि की स्थिति निम्न प्रकार है।

(i) प्रथम अवस्था – (अ) ब्लैकर महोदय के अनुसार यह अवस्था उच्च स्थिरता की अवस्था है जिसमें जनसंख्या वृद्धि स्थिर होती है। कारण इसमें जन्मदर एवं मृत्यु दर एक समान अर्थात 35 से 50 व्यक्ति प्रतिहजार (के) होगा। यह अवस्था कृषि आधारित पिछड़ी अर्थव्यवस्था, गरीबी, चिकित्सा सुविधा का अभाव की स्थित होती है। इसमें लोग अधिक बच्चे पैदा करना आय का स्रोत मानते हैं। कुपोषण एवं महामारियों के कारण पुनः मृत्युदर शीघ्रतादर को तरह अधिक होता है।

(ii) दूसरी अवस्था – (ब) विकास का स्फोटक है। इसमें आर्थिक विकास, कृषि का विकास, नगरीकरण एवं चिकित्सा सुविधा में विकास के कारण मृत्यु दर में कमी आने लगती है। परन्तु जन्म दर प्रथम अवस्था के तरह ही उच्च रहता है, जिस कारण जन्म एवं मृत्युदर में अन्तर आजाने से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होने लगती है।

(iii) तीसरी अवस्था (स) में औद्योगीकरण, नगरीकरण, आय में वृद्धि, शिक्षा का प्रसार एवं आधुनिकता के कारण लोग विशेषकर महिलाएं अधिक बच्चे पैदा करना पसन्द नहीं करती। छोटा परिवार का प्रचलन होने लगता है। दूसरी तरफ चिकित्सा सुविधा में और सुधार के कारण मृत्यु दर भी लगातार घटता जाता है, जिससे पुनः दोनों में अन्तर के कारण जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बन गई है।

(iv) चौथी अवस्था में उपरोक्त सुविधाओं में विकास एवं छोटा परिवार सुखी परिवार के प्रचलन के कारण जन्मदर में तीव्र ह्रास होने के कारण पुनः जनसंख्या वृद्धि स्थिर हो जाता है।

(v) पाँचवीं अवस्था में जन्म दर में लगातार गिरावट आ जाने एवं मृत्युदर स्थिर हो जाने के कारण जनसंख्या घटने लगती है, जैसे जर्मनी फ्रांस में अभी जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि देखने को मिलता है।

(एन. के. कुमार)